पंजीयन संख्या : 68939 /98 अंक – 20, वर्ष – 24

ज्ञान तत्व

समाज शास्त्र

अर्थ शास्त्र

धर्म शास्त्र

राजनीति शास्त्र

433

- : सम्पादक :-

बजरंग लाल अग्रवाल

रामानुजगंज (छ.ग.)

सत्यता एवं निष्पक्षता का निर्भीक पाक्षिक

पोस्ट की तारीख 01/08/2023

प्रकाशन की तारीख 16/07/2023

पाक्षिक मूल्य – 2.50/– (दो रूपये पचास पैसे)

पेज संख्या - 24

“ शराफत छोड़ो, समझदार बनो ”

“ सुनो सबकी, करो मन की ”

“ समस्याओं के प्रणेता, कर कानून नेता ”

“ समाधान का आधार ज्ञान यज्ञ परिवार ”

“ चाहे कोई अत्याचार, नहीं करेंगे नही सहेंगे ”

“ हमें सुराज्य नही, स्वराज्य चाहिए ”

विविध विषयों पर बजरंग मुनि जी के महत्वपूर्ण विचार

1–योग दिवस की सार्थकता :

योग दिवस पूरे विश्व में संयुक्त राष्ट्र संघ की देख–रेख में बड़े उत्साह से मनाया गया। पिछले कुछ वर्षों में योग शब्द का विश्वव्यापी प्रचार–प्रसार करने में बाबा रामदेव और भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का सबसे अधिक योगदान रहा। भारत में योग बहुत पुराने समय से प्रचलित रहा है। लेकिन सारी दुनिया में योग शब्द को सिर्फ भारतीय पहचान प्राप्त थी, विश्वव्यापी नहीं। इन लोगों के अथक प्रयास से योग शब्द को विश्वव्यापी पहचान तो मिली लेकिन योग का पूर्ववर्ती स्वरूप भी बदल कर पूर्णतः सरल हो गया। पुराने जमाने में योग की शुरुआत मानसिक व्यायाम से होती थी और समापन आत्मिक व्यायाम से। बीच में सिर्फ शारीरिक व्यायाम शामिल होता था आसन, प्राणायाम और प्रत्याहार। लेकिन बाबा रामदेव का योग मानसिक और आध्यात्मिक व्यायाम को किनारे करके शारीरिक व्यायाम तक केंद्रित हो गया। यद्यपि बाबा रामदेव के योग में आंशिक रूप से मानसिक और आत्मिक व्यायाम भी शामिल था, लेकिन अब जो मोदी जी के प्रयास से दुनिया में योग का विस्तार हो रहा है, वह सिर्फ शारीरिक व्यायाम तक केंद्रित हो गया है। उसमें मानसिक और आत्मिक व्यायाम जैसा कुछ भी नहीं है। पुराने जमाने में यम और नियम को योग की पहली और अनिवार्य शर्त मानी जाती थी। बाबा रामदेव के सरल योग में यम और नियम स्वैच्छिक है और मोदी जी के संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा संचालित योग से यम और नियम गायब है। भले ही योग और योग शब्द का व्यायाम में विलय हो गया है किंतु फिर भी यदि व्यायाम को ही योग मानने के लिए दुनिया सहमत हो रही है तो भी यह बात भारत के लिए एक बड़ी उपलब्धि है।

हम व्यक्तिगत रूप से प्रयास करें कि योग यम नियम से शुरू हो और धारणा ध्यान समाधी तक जाए। लेकिन यदि कोई इस कठिन योग की जगह सरल योग को अपनाकर शारीरिक शुद्धि की दिशा में आगे बढ़ता है तो उसे प्रोत्साहित करने में भी लाभ ही है। मैं दुनिया में योग का विस्तार करने के लिए भारत की प्रशंसा करता हूँ।

2– विश्वशांति का मार्ग – हिन्दुत्व :

मैं नरेंद्र मोदी के आने के बाद एक बदलाव देख रहा हूँ। यह बात सही है कि हिंदुओं में अब अच्छी जागृति आई है। अब भारत का मुसलमान कुछ ठीक ढंग से सोचने की दिशा में बढ़ रहा है, लेकिन यह बदलाव कहीं गलत दिशा में ना चला जाए, इसकी भी चिंता लगी हुई है। हम इस्लाम का मुकाबला हिंदुत्व के तरीके से करें या इस्लाम के तरीके से करें, इस विवाद का हल नहीं हो पा रहा है। कट्टरवादी हिंदू नरेंद्र मोदी के आने के बाद इस बात से बहुत उत्साहित हैं कि हमें इस्लामिक

तरीके से ही इस्लाम का मुकाबला करना चाहिए, जबकि परंपरागत हिंदू इस बात के पक्ष में नहीं है। वह यह चाहता है कि हम हिंदुत्व के तरीके से ही काम करते रहे, भले ही मुसलमान मजबूत क्यों ना हो जाए। इन दोनों विचारधाराओं के बीच में भारत का हिंदू फंसकर रह गया है कि हमें इस्लामिक तरीके से इस्लाम को टक्कर देनी चाहिए अथवा हिंदुत्व के तरीके से हमें मार खानी चाहिए। मेरा इसमें एक तीसरा विचार है जिस समय हमें इस्लामिक तरीके से टकराने की जरूरत थी, उस समय तो नहीं टकरा सके, हम हिंदुत्व के तरीके से मार खाते रहे और बड़ी मुश्किल से हम इस मामले से 70 वर्षों के बाद निकल पाए। हम लगातार देखते रहे कि कांग्रेस, मुसलमान और कम्युनिस्ट मिलकर हिंदुओं को दूसरे दर्जे का नागरिक बना कर रख रहे हैं। उस समय हमें इस्लामिक तरीके से टकराने की जरूरत थी। लेकिन हम उस समय उस तरीके से नहीं टकरा सके, हिंदुत्व के तरीके से सत्ता में बदलाव करने में सफल हो गए। अब जब नरेंद्र मोदी आ गए हैं तो हमें इस्लामिक तरीके से अग्रेसीव होने की क्या आवश्यकता है? हम क्यों कानून तोड़ने लगें? हम क्यों नहीं हिंदुत्व के तरीके से दुनिया में नया संदेश दें। इस्लाम और हिंदुत्व यह दोनों अलग–अलग विचारधाराएं हैं। सरकार कानून के माध्यम से इस्लाम से निपट लेगी इसलिए हमें अपना हिंदुत्व नहीं छोड़ना चाहिए।

मेरा अपना विचार यह है कि अब नरेंद्र मोदी के आने के बाद हिम्मत दिखाने की कोई आवश्यकता नहीं है बल्कि अब तो हम हिंदुओं को दुनिया को शांति का मार्ग दिखाना चाहिए। सरकार कानून तोड़ने वालों से निपट लेगी। इस बात पर विश्वास करने की जरूरत है। मैं उग्र हिंदुत्व के खिलाफ हूँ।

3–हिन्दुत्व की गुणवत्ता :

अनेक लोग हिंदू धर्म को खतरे में मानते रहे है और इस खतरे से सावधानी की सलाह देते रहे। इस संबंध में मेरा अपना विचार अलग है। मैं यह मानता हूँ कि हिंदू धर्म पर उस समय खतरा था जब पंडित नेहरू वोटों की लालच में मुसलमानों और कम्युनिस्टों को हिंदू धर्म के खिलाफ एक ढाल के रूप में इस्तेमाल कर रहे थे। उस समय हिंदू धर्म को अतिरिक्त सुरक्षा की जरूरत थी। भले ही वह सुरक्षा कट्टरवादी हिंदू ही क्यों ना दे रहे हों। हम लोगों ने भी उस समय अपने–अपने तरीके से हिंदुत्व की सुरक्षा के अनेक प्रयत्न किए हैं। अब हिंदू पूरी तरह सुरक्षित हैं। हिंदू धर्म और हिंदुत्व को अब कोई खतरा नहीं है। जब राम रूपी मोदी और मोहन भागवत की जोड़ी हिंदू धर्म की सुरक्षा के लिए निरंतर सक्रिय हैं तब विश्वामित्र रूपी हिंदू धर्म को निश्चिंत होकर अपना यज्ञ पूरा करना चाहिए। जो लोग अब भी हिंदू धर्म पर खतरे की बात करते हैं, वह पूरी तरह गलत हैं। अब इस वातावरण में हिंदुत्व को गुणात्मक विशेषताओं के आधार पर दुनिया को नया मार्ग दिखाना चाहिए। हिंदू धर्म खतरे में है, ऐसी बात अब भी जो लोग कहते हैं वे या तो नासमझ हैं या उनकी कोई ना कोई राजनीतिक महत्वाकांक्षा है। अब भारत का हिंदू एकजुट हो जाए, इस नारे का कोई

औचित्य नहीं है। अब तो भारत का हिंदुत्व सारी दुनिया का मार्गदर्शन करे, इसकी सफलता के लिए नए–नए रिसर्च करने की जरूरत है। हिंदू धर्म में सारी दुनिया को मार्गदर्शन देने की अद्भुत क्षमता है। आवश्यकता है उस क्षमता का सही दिशा में उपयोग करने की। हम भारत के लोग सारी दुनिया को विचारों का निर्यात करते थे और आज हम सारी दुनिया से विचारों का आयात कर रहे हैं। यह हिंदुत्व के लिए एक कलंक है। ऐसे समय में हमें तीन फैसले लेने चाहिए। पहला कि हम नरेंद्र मोदी और मोहन भागवत पर पूरा विश्वास करें कि वह हिंदुत्व की सुरक्षा करने में सफल हैं। दूसरा कि हम नरेंद्र मोदी और मोहन भागवत को राजनीतिक रूप से इतनी शक्ति दें कि उन्हें कांग्रेस, मुसलमान और कम्युनिस्ट की तिकड़ी से कोई खतरा ना रहे। तीसरा कि हम वैचारिक धरातल पर इतने शक्तिशाली हों कि हम दुनिया को विचारों का निर्यात कर सकें।

मेरा आप सब से निवेदन है कि आइए हिंदुत्व की सुरक्षा के लिए और हिंदुत्व को सशक्त बनाने के लिए हम आप सब एक साथ मिलकर नए तरीके से काम करना शुरू करें।

4–विपक्ष द्वारा किया जा रहा अच्छे कार्यो का भी विरोध, गलतः

कुछ दिनों पहले राहुल गांधी अमेरिका के किसी कॉलेज में भाषण देने गए थे। उन्होंने वहां जो कुछ भी कहा वह सही था या गलत, यह हमारी आज की चर्चा का विषय नहीं है। महत्वपूर्ण विषय यह है कि नरेंद्र मोदी को अमेरिका में बहुत अच्छा राजकीय सम्मान प्राप्त हुआ। यह सम्मान नरेंद्र मोदी का नहीं था बल्कि भारत के प्रधानमंत्री का था जिनकी अच्छी नीति से प्रभावित होकर अमेरिका ने मोदी को इतना अधिक सम्मान दिया। कुछ बर्ष पहले ही जब मोदी प्रधानमंत्री नहीं थे उस समय नरेंद्र मोदी को यही अमेरिका एक हिंदू सांप्रदायिक व्यक्ति के रुप में मान रहा था और आज वही अमेरिका मोदी का कार्यकाल देखने के बाद नरेंद्र मोदी को एक लोकतांत्रिक धर्म निरपेक्ष भारतीय प्रधानमंत्री के रुप में स्वीकार कर रहा है। विपक्षी दल जोर शोर से नरेंद्र मोदी को एक लोकतंत्र विरोधी सांप्रदायिक व्यक्ति के रुप में स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं। लेकिन ऐसे सभी प्रयास असफल सिद्ध हो रहे हैं।

सोनिया जी ने कल एक गलत बयान देकर मुझे बहुत दुःख पहुंचाया। अपने बयान में सोनिया ने यह कहा कि मोदी जी को अमेरिका जाने की अपेक्षा इंफाल जाना चाहिए। भाई मैं अभी तक नहीं समझा कि यह बयान कितना मूर्खतापूर्ण है। नरेंद्र मोदी का अमेरिका जाना देश के लिए बहुत महत्वपूर्ण कार्य था। इम्फाल तो अमित शाह या सोनिया गांधी भी जाकर संभाल सकती है। लेकिन अमेरिका के साथ समझौते अमित शाह अथवा सोनिया जी नहीं कर सकते हैं। इम्फाल वालों की समस्या महीनों से चल रही है लेकिन अमेरिका जाने का अवसर बहुत बरसों के बाद पहली बार आया है। राजनैतिक कारणों से नरेंद्र मोदी की अमेरिका यात्रा की आलोचना सोनिया जी का मूर्खतापूर्ण कथन माना जाना चाहिए। नासमझ राहुल अगर इस प्रकार की कोई अंड–बंड बात बोल

दे तो उसका कोई महत्व नहीं है लेकिन सोनिया गांधी अमेरिका की यात्रा की अनावश्यक आलोचना करे तो यह बात ठीक नहीं लगती है। मेरे विचार से नरेंद्र मोदी की अमेरिका यात्रा एक ऐतिहासिक अवसर है। और विपक्ष को भी इसे भारतीय प्रधानमंत्री की सफलता मानकर प्रशंसा करनी चाहिए।

5–सामाजिक संस्थाओं के बिगड़ते अराजनैतिक स्वरूप के नुकसान :

साप्ताहिक निर्दलीय भोपाल से प्रकाशित एक प्रतिष्ठित समाचार पत्र है, जिसमें एक समाचार छपा है कि गांधी भवन भोपाल में देशभर के प्रमुख गांधीवादियों का एक सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन में लगभग सर्वसम्मति से नरेंद्र मोदी के विरुद्ध चर्चा हुई। सम्मेलन में वर्तमान गांधीवादी दिग्विजय सिंह जी, रामचंद्र राही तथा अनेक अन्य लोगों ने अपने विचार व्यक्त किए। सम्मेलन में मुख्य रूप से इस बात पर चर्चा केंद्रित रही कि नरेंद्र मोदी सरकार बनारस दिल्ली स्थित अनेक गांधीवादी संस्थाओं पर संघ का नियंत्रण करा रही है। इस संबंध में मुझे व्यक्तिगत रूप से भी अनुभव और जानकारी है। मैं गांधी, बिनोवा, जयप्रकाश के साथ हमेशा जुड़ा रहा इसलिए मुझे भी गांधीवादी समझकर गांधीवादियों की प्रमुख बैठकों में बुलाया जाता था। मैंने आज से बीस वर्ष पहले भी बैठक में खुलकर यह बात रखी थी कि हमें सत्ता की राजनीति से दूरी बनाकर रखनी चाहिए। लेकिन हमारे अनेक गांधीवादी मित्र सत्ता और संपत्ति के मोह में नेहरू सरकार का खुलकर समर्थन करना चाहते थे, जो उन्होंने हमेशा किया भी। आज गांधीवादियों के साथ संघ परिवार का जो टकराव दिख रहा है वह पूरी तरह गांधी, बिनोवा, जयप्रकाश के विचारों के विरुद्ध है। यह पूरा टकराव सत्ता और संपत्ति का है। नरेंद्र मोदी के आने के पूर्व अनेक सरकारी संपत्तियों का संचालक गांधीवादियों को ही बनाया जाता था और बदले में गांधीवादी कांग्रेसी सरकार की चुनाव में मदद करते थे। अब नरेंद्र मोदी सरकार आने के बाद उस सरकारी संपत्ति का संचालक संघ वालों को बनाया जा रहा है अथवा कई जगह ऐसे गांधीवादियों को आगे बढ़ाया जा रहा है जो नरेंद्र मोदी की जय जयकार करते हैं। भोपाल के सम्मेलन में यदि संपत्ति के झगड़े को छोड़कर लोक स्वराज पर आगे बढ़ने का कोई संकल्प लिया जाता तब वह गांधी, बिनोवा, जयप्रकाश का विचार होता अन्यथा गांधी, विनोबा, जयप्रकाश के नाम पर संपत्ति विवाद किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है। अच्छा हो कि इस प्रकार के विवाद न्यायालय से निपटाए जाएं, सड़कों पर नही।

मैंने लंबे समय तक गांधीवादियों के साथ मिलकर काम किया है और आज भी अनेक गांधीवादियों के साथ जुड़ा हुआ हूँ। मेरा यह अनुभव है कि गांधीवादियों में बड़ी संख्या में ईमानदार लोग हैं जो अप्रत्यक्ष रूप से धन मुक्ति का पालन करने वाले हैं। इस प्रकार के लोग आप को गरीब दिखेंगे लेकिन वैचारिक धरातल पर बहुत मजबूत होते हैं। इन लोगों की संख्या गांधीवादियों में घटती जा रही है, यह एक अलग बात है। लेकिन आज भी ऐसे अनेक लोग हैं जो पूरी तरह त्यागी, तपस्वी और ईमानदार हैं। वर्तमान में मैं अनेक लोगों को देख रहा हूँ या जुड़ा हुआ हूँ उनमें धर्मेंद्र

राजपूत, ओम प्रकाश दुबे, कर्नाटक के एम.एच.पाटील, राजपाल मिश्रा तथा अन्य कई लोग भी हैं। लेकिन जो उच्च पदों पर विराजमान है उनमें इस प्रकार के गुणों की कमी दिख रही है। वे लोग पूरी तरह गांधी विचारों के विपरीत काम कर रहे हैं। जो उच्च पदों पर बैठे हुए हैं यह आपस में संपत्ति की लड़ाई लड़ते हैं, सत्ता की लड़ाई लड़ते हैं, नक्सलवाद और आतंकवाद का समर्थन करते हैं,राजनीति में तिकड़मबाजी करते हैं, इस प्रकार के लोग गांधी की पवित्रता को बदनाम करते हैं। हमारे साथ जो गांधीवादी मिलकर काम कर रहे हैं, उनके दिलों में लोक स्वराज के लिए एक छटपटाहट है। उनके अंदर वर्तमान समय में समाज की गिरती हुई स्थिति के प्रति एक चिंता है, लेकिन कोई मार्ग नहीं दिख रहा है, यह अलग बात है।

मेरा आप सब से निवेदन है कि आंख बंद करके गांधी की या गांधीवादियों की आलोचना करना उचित नहीं है। समाज के सभी वर्गों में गिरावट आई है और अगर गांधीवादियों में भी कुछ गिरावट दिख रही है तो हमें परिस्थितियों का आंकलन करना चाहिए। मेरा फिर से निवेदन है कि आंख बंद करके गांधी या गांधीवादियों की आलोचना मत करिए। यदि गांधी को देखना है तो आप अनेक अच्छे गांधीवादियों में गांधी को देख सकते हैं।

6–नक्सलवादी कह गोली मारना– एक कांग्रेसी तरीका :

मेरे मन में बचपन से ही नेहरू परिवार के प्रति बहुत नफरत है क्योंकि नेहरू परिवार ने गांधी के साथ धोखा किया। एक मूर्ख ने गांधी के शरीर की हत्या कर दी। उसका नाम था नाथूराम गोडसे और एक धूर्त ने गांधी के विचारों की हत्या कर दी उसका नाम था जवाहरलाल नेहरू। मैंने बचपन से ही नेहरू परिवार से घृणा की। मेरे मन में नेहरू परिवार के प्रति बहुत आक्रोश है, क्योंकि नेहरू परिवार ने आज के ही दिन 48 वर्ष पहले मुझे जेलों में बंद कर दिया था। मेरे ऊपर सब प्रकार के अत्याचार किए गए। जबकि मैं पूरी तरह गांधी को मानने वाला था। गांधी, बिनोवा, जयप्रकाश के साथ मिलकर काम करने के कारण मुझे 18 महीने तक जेलों में बंद करके रखा गया।

मैं नेहरू परिवार को कभी भी माफ नहीं कर सकता क्योंकि लगभग 25 वर्ष पहले जब मैंने लोक स्वराज्य का नारा दिया, लोक स्वराज्य के लिए अपने शहर रामानुजगंज में विचार मंथन शुरू किया, देशभर के लोगों को बुलाकर संविधान पर मंथन शुरू किया, तब नेहरू परिवार ने मुझे नक्सलवादी घोषित करके गोली मारने की योजना बनाई। मैं नेहरू परिवार की इस योजना से भी न्यायालय की मदद से बच गया अन्यथा मुझे यह अच्छी तरह अनुभव है कि किसी भी भले आदमी को गोली मारने के लिए नक्सलवादी कह देना नेहरू परिवार का एक खास तरीका है। इस तरह मैं अपने पूरे जीवन भर का इतिहास आपके सामने बता सकता हूँकि मैं नेहरू परिवार से क्यों घृणा करता हूँ। नेहरू परिवार के प्रति मेरे मन में आक्रोश है और नेहरू परिवार को मैं कभी माफ नहीं कर सकता। आज मुझे इस बात की खुशी होती है कि अब नेहरू परिवार मिट्टी में मिलता जा रहा है और

अपने किए का फल भोग रहा है। बुरे काम का बुरा नतीजा ईश्वर इसका परिणाम देता है और निर्दोषों पर अत्याचार का श्राप भी कुछ ना कुछ परिणाम देता ही है, यह नेहरू परिवार से आप देख सकते हैं।

7–मुद्रा स्फीति की मार – अनावश्यक प्रचार :

वर्तमान समय में दुनिया में, खासकर भारत में सत्य और असत्य को अलग–अलग करना बहुत कठिन हो गया है। प्रसार माध्यमों का सहारा लेकर असत्य को भी सत्य के समान स्थापित कर दिया जाता है। अभी कुछ दिन पहले ही बड़े जोर–शोर से यह बात प्रसारित की गई कि नरेंद्र मोदी के आने के बाद भारत सरकार पर कर्ज बहुत अधिक बढ़ गया है। मैंने इस मुद्दे की छानबीन की तो पाया कि सन 2004 में भारत सरकार पर 17 लाख करोड़ का कर्ज था जो 2014 में बढ़कर 55 लाख करोड़ हो गया था। वह 55 लाख करोड़ का कर्ज अब बढ़कर 155 लाख करोड़ हो गया है। इसका अर्थ हुआ कि लगभग 50 वर्ष पहले जो कर्ज एक लाख करोड़ रहा होगा वही कर अब बढ़कर 155 लाख करोड़ हुआ है। स्पष्ट है कि हर 10 वर्ष में यह कर्ज 3 गुना बढ़ता था क्योंकि मुद्रास्फीति भी बहुत तेजी से बढ़ रही थी और सरकारों का अपना खर्च भी बढ़ रहा था। स्वाभाविक है कि ऐसी परिस्थिति में कर्ज बढ़ेगा। फिर भी नरेंद्र मोदी के आने के बाद कर्ज उस तरह नहीं बढ़ा जिस तरह नरेंद्र मोदी के पहले बढ़ रहा था। मोदी जी के आने के बाद ढ़ाई तीन वर्ष तक कोरोना काल में कर्ज लेकर ही सारा काम चलता रहा। प्रदेश सरकारें अभी केंद्र सरकार से बहुत अधिक कर्ज ले रही है। इसलिए यह कर्ज का प्रचार बिल्कुल झूठा सिद्ध होता है। मुद्रास्फीति को यदि घटा दिया जाए तो कर्ज की वृद्धि बहुत मामूली हो जाएगी। राहुल गांधी ने कर्ज बढ़ने की बात कह कर एक झूठ बात को सत्य सिद्ध करने का प्रयास किया है। राहुल जी को बताना चाहिए कि 2004 में 17 लाख करोड़ का कर्ज 2014 में 55 लाख करोड़ कैसे हो गया और यदि 55 लाख करोड़ का कर्ज अब बढ़कर 155 लाख करोड़ हो गया है तो इसमें कौन–सी नई बात हो गई। मैं जानना चाहता हूं कि स्वतंत्रता के समय भारत पर कितना कर्ज था? 2014 में बढ़कर कितना हो गया था और इस कर्ज वृद्धि का जिम्मेदार कौन था? मेरा फिर से निवेदन है कि राजनीतिक लाभ के लिए प्रचार माध्यमों का सहारा लेकर झूठ बात को सच के समान प्रसारित करना अच्छी बात नहीं है।

8–सुरक्षा और न्याय हो सरकारों कि प्राथमिकता :

आज के अखबारों में यह समाचार प्रमुखता से छपा है कि लॉरेंस बिश्नोई गैंग बहुत तेजी से मजबूत हो रहा है। इस गैंग से अबतक देश भर में 700 के आसपास खतरनाक अपराधी जुड़ चुके हैं। इस गैंग की तुलना दाऊद इब्राहिम के समकक्ष होने लगी है। वैसे तो पूरे देश में एक भी ऐसा बड़ा शहर नहीं है, जहां छोटे–छोटे गैंग सक्रिय ना हो। इनमें उत्तर प्रदेश अकेला ऐसा राज्य है जो इन पर नियंत्रण का प्रयास कर रहा है अन्यथा देश के सभी राज्य इन अपराधी गैंग से या तो

समझौता कर चुके हैं या चुप रहने के लिए मजबूर हैं।दूसरी तरफ आज के अखबारों में देश के गृह मंत्री अमित शाह का भी एक बड़ा बयान बड़े–बड़े अक्षरों में छपा है जिसमें लिखा गया है कि अमित शाह जी ने देश को यह आश्वासन दिया है कि सरकार देश को मादक पदार्थों से मुक्त कराएगी। केंद्रीय गृह मंत्री के अनुसार भारत सरकार की मादक पदार्थों के लिए जीरो टॉलरेंस की नीति बन चुकी है। नीतीश कुमार तो शराबबंदी को सबसे अधिक महत्वपूर्ण कार्य मान रहे हैं। हमारी छत्तीसगढ़ सरकार भी लगातार हुक्काबार, पार्लर और अवैध स्पा सेंटरों पर कठोर कार्रवाई कर रही है।

मुझे समझ में नहीं आ रहा है कि हमारी भारत सरकार अथवा प्रदेश सरकारों की प्राथमिकता जगह–जगह खुल रहे हत्या का व्यापार करने वालों की दुकानों को रोकना है या नशा मुक्त भारत बनाना हमारी पहली प्राथमिकता है। मेरे विचार से दोनों ही प्राथमिकताओं का अपना अलग–अलग महत्व है किंतु सुरक्षा और न्याय की कीमत पर नशा मुक्ति और स्पा सेंटरों को रोकने का प्रयास अनुचित है। हमारी केंद्र और प्रदेश सरकारों को इन सब मामले में दुनिया की नकल ना करके अपनी भारतीय आवश्यकताओं पर प्राथमिकता तय करनी चाहिए।

9–समान नागरिक संहिता कानून पर पक्ष और विपक्ष :

हम लोग बहुत लंबे समय से समान नागरिक संहिता की मांग करते रहे हैं। समान नागरिक संहिता मंच के बैनर तले कई बार छुटपुट आंदोलन भी किए गए। नरेंद्र मोदी सरकार पहले समान नागरिक संहिता के पक्ष में थी लेकिन सरकार बनने के बाद उसने समान नागरिक संहिता को किनारे रख दिया था। अब जब चुनाव का समय आया हुआ है तब मोदी सरकार ने समान नागरिक संहिता पर सक्रियता दिखानी शुरू की है। मैं मानता हूँ कि यदि वोटों का लाभ नहीं होता तो सरकार अभी भी इस मामले में और चुप रहती। लेकिन हमें समझ में नहीं आ रहा है कि विपक्ष अच्छी तरह जानते हुए भी कि भारत की जनता समान नागरिक संहिता के पक्ष में है और वह चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के लिए सहायक बनेगा। इसके बाद भी विपक्ष इस कानून का विरोध करके अपनी आत्महत्या क्यों कर रहा है? समझ में नहीं आ रहा कि विपक्षी दल वोटों की चिंता क्यों नहीं कर रहे हैं? क्या वह आम जनता को मूर्ख समझ रहे हैं कि जनता उनके बहकाने से समान नागरिक संहिता का विरोध कर देगी। सत्ता पक्ष वोटों की लालच में कानून ला रहा है, यह तो कोई तर्क नहीं हुआ। तर्क तो यह होता कि विपक्ष और भी तेज गति से यह कानून बनाने का सरकार पर दबाव डालता। इस दबाव के आधार पर वोट बंट जाते और सरकार इसका एकतरफा लाभ नहीं उठा पाती। समझ में नहीं आता कि विपक्ष ऐसी गलती क्यों कर रहा है। विपक्षी दलों का यह तर्क भी मूर्खतापूर्ण ही है कि इस संबंध में कानून बनाने के पहले सभी पक्षों से बात की जाए। समान नागरिक संहिता का मतलब है कि पक्षरहित समाज होना। प्रत्येक व्यक्ति एक स्वतंत्र इकाई होगा और सरकार की नजर में कोई गुट या समूह को सरकारी मान्यता नहीं होगी। विपक्ष का यह कैसा तर्क है कि

जिसको दंड देना है या जिसके खिलाफ कानून बनाना है, उससे ही सलाह ली जाए। होना तो यह चाहिए था कि किसी भी गुट से कोई सलाह ना ली जाए, क्योंकि गुटबंदी को समाप्त करने के लिए समान नागरिक संहिता कानून लाया जा रहा है। विपक्ष को उत्तर देना चाहिए कि भारत सरकार 140 करोड़ व्यक्तियों को समानता का अधिकार देने के लिए 140 करोड़ व्यक्तियों से स्वतंत्रता पूर्वक 14 जुलाई तक पूछेगी। हमारे विपक्षी दल 140 करोड़ व्यक्तियों से पूछने की अपेक्षा धर्म और जाति के ठेकेदारों से राय लेने की सरकार को सलाह दे रहे हैं।

अरे भाई, ठेकेदारी प्रथा को समाप्त करने के लिए जो कानून बनाया जा रहा है, उसमें ठेकेदारों की सलाह क्यों ली जाए? मेरा निवेदन है कि विपक्ष मुक्त भारत ना बन जाए इसके लिए सिर्फ सरकारों को ही नहीं, बल्कि विपक्षी दलों को भी कुछ अक्ल से काम लेना चाहिए।

10–अनावश्यक कानूनों के कारण समझदारी पर बढ़ता दबाव :

एक बात साफ हो चुकी है कि सारी दुनिया में समझदारी घट रही है और इसकी जगह या तो शराफत बढ़ रही है अथवा चालाकी। समझदारी का घटना और शराफत या चालाकी का बढ़ना एक खतरनाक संकेत है। दुनिया में तो यह खतरा बहुत लंबे समय से बढ़ रहा है। जहां पुराने जमाने में भारत में समझदार लोगों का प्रतिशत दुनिया में सबसे अधिक था वहां अब वर्तमान समय में दुनिया के अन्य देशों की तुलना में बहुत कम हो गया है। मैंने भारत में भी समझदारी का प्रतिशत कम होने के कारणों पर लंबा रिसर्च किया। मैंने यह पाया कि जिस भूभाग में संगठनों की मात्रा जितनी अधिक होती है समझदारी का प्रतिशत उतना ही अधिक घटता जाता है। भारत में भी धार्मिक स्वतंत्रता घटकर धार्मिक संगठनवाद तेजी से बढ़ रहा है। यह एक प्रमुख कारण है। एक कारण और भी है कि जिस देश में कानूनों की जितनी अधिक और व्यापक मात्रा होती है उस देश में समझदारी का प्रतिशत उतना ही अधिक कम हो जाता है। भारत में वर्तमान समय में आम नागरिकों में समझदारी घटने का प्रमुख कारण यही है कि यहां कानूनों की मात्रा बहुत अधिक है। यदि हम समाज में समझदार लोगों की मात्रा बढ़ाना चाहते हैं तो हमें कानूनों को कम करते जाना पड़ेगा। कानूनों को कम किए बिना समझदार की मात्रा बढ़ाना संभव नहीं है। मेरा आपसे फिर निवेदन है कि अनावश्यक कानून हटाइए और आम लोगों को निर्णय करने की अधिक से अधिक स्वतंत्रता दीजिए।

प्रश्न – मुनि जी कभी आप कहते हैं कि भावना प्रधान व्यक्ति में समझदारी नहीं होती है और आज कह रहे हैं कि कानूनों की अधिकता व्यक्ति की समझदारी घटा देती है। तो समझदारी के होने ना होने से भावना अथवा कानून का क्या संबंध है? और समझदार व्यक्ति का लक्षण क्या है?

उत्तर– व्यक्ति तीन प्रकार के होते हैं– शरीफ, समझदार और चालाक। शरीफ व्यक्ति भावना प्रधान होता है और चालाक व्यक्ति बुद्धि प्रधान होते हैं। समझदार व्यक्ति में भावना और बुद्धि का संतुलन होता है। यदि प्रत्येक व्यक्ति को अपने उचित अनुचित का निर्णय करने की स्वतंत्रता ना हो तो वह

भावना प्रधान बन जाता है और धीरे–धीरे वह शरीफ को जाता है। शराफत ही धूर्तों की धूर्तता में सहायक होती है। इसका अर्थ यह हुआ कि यदि धूर्तता पर अंकुश लगाना है तो शराफत को समझदारी में बदलना आवश्यक है। जब राजनैतिक और प्रशासनिक व्यवस्था न्यायसंगत कार्य कर रही है तब व्यक्ति शरीफ हो तो कोई हर्ज नहीं है क्योंकि ऐसी परिस्थिति में व्यवस्था धूर्तता पर नियंत्रण कर लेती है लेकिन यदि राजनैतिक व्यवस्था धूर्तता के साथ तालमेल कर ले, तब हर शरीफ को समझदार होना चाहिए जिससे कि वह ठगा ना जा सके।

कानूनों की मात्रा बढ़ा–बढ़ा कर बहुत अधिक कर दी गई है। इससे आम नागरिक की समझदारी घट रही है। जब आप जुआ, शराब, वेश्यावृत्ति सरीखे सामाजिक कार्यों को भी कानून से रोकेंगे तब हर व्यक्ति के अंदर व्यक्तिगत अनुभव घटता जाएगा और इसका दुष्परिणाम होगा कि वह उचित अनुचित का निर्णय खुद ना करके सरकार का मुखापेक्षी हो जाएगा। यदि किसी परिवार में परिवार का मुखिया हर छोटे–छोटे मामले में भी स्वयं ही निर्देश देने लगे तो परिवार के अन्य सदस्यों का बौद्धिक विकास रुक जाता है। ज्योंहि वह सदस्य हट जाता है त्योंहि वह परिवार बर्बाद हो जाता है क्योंकि मुखिया ने परिवार के अन्य सदस्यों को खुद से कुछ सोचने का अवसर ही नहीं दिया। वर्तमान समय में हमारी समझदारी इतनी अधिक घटा दी गई है कि हम हर मामले में सरकार पर निर्भर हो जाएं। यह स्थिति अच्छी नहीं है।

जो शरीफ व्यक्ति होता है वह सिर्फ कर्तव्य करना जानता है, अधिकारों की चिंता नहीं करता। चालाक व्यक्ति कर्तव्य नहीं करता सिर्फ अधिकारों की बात करता है और समझदार व्यक्ति दोनों में संतुलन बनाकर रखता है। ऐसे आमतौर पर धार्मिक रूचि के लोग अधिक शरीफ होते हैं और राजनौतिक रूचि के लोग अधिक चालाक होते हैं। समझदार व्यक्ति धर्म और राजनीति के मामले में संतुलन बनाकर रखता है। समझदार व्यक्ति ना तो अंध धार्मिक होता है और ना ही धर्म से नफरत करता है।

11–विवाह एक सामाजिक विषय है, कानूनी नहीं :

मैंने अनेक सामाजिक विषयों पर लंबे समय तक विचार मंथन करने के बाद जो अंतिम निष्कर्ष निकाले उनमें से कुछ निष्कर्षों पर सरकार आजकल काम कर रही है तथा अन्य निष्कर्षों पर भी कहीं न कहीं समाज में आवाज उठ रही है। मैंने कई बार लिखा है कि विवाह की उम्र कम होनी चाहिए अधिक नहीं। लेकिन हकीकत में पूरी दुनिया की वर्तमान व्यवस्था विवाह की उम्र बढ़ाने के पक्षधर हैं। भारत भी उनमें से एक है। लेकिन कल ही मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय ने भारत सरकार से यह मांग की है कि वह शारीरिक संबंध बनाने के लिए महिलाओं की न्यूनतम उम्र 18 वर्ष को घटाकर 16 वर्ष कर दे। उच्च न्यायालय का यह मानना है कि शारीरिक संबंध बनाना एक प्राकृतिक आवश्यकता है और उस शारीरिक भूख को किसी कानून के द्वारा तब तक नहीं रोका जा सकता जब

तक बहुत अधिक हानिकारक ना हो या उसमें आपसी सहमति बिल्कुल ना हो। मैं हमेशा से इसी बात का पक्षधर रहा हूँ जिस निष्कर्ष पर अब न्यायालय पहुंच रहा है। मैं तो इससे भी आगे बढ़कर विवाह की उम्र घटाने का पक्षधर हूँ। लेकिन यदि हमारी सरकार विश्व व्यवस्था के बिलकुल विपरीत जाने की हिम्मत नहीं भी दिखा पा रही है तो सरकार इस संबंध में एक व्यापक बहस शुरू करे कि यदि कोई व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं पर नियंत्रण ना कर सके तब उसके समक्ष क्या विकल्प है।

इसी तरह मैंने कई बार लिखा कि परिवार की संपत्ति में महिला पुरुष का भेद किए बिना सबका समान अधिकार होना चाहिए। यह अधिकार परिवार से अलग होते समय समान और परिवार में रहते हुए संयुक्त होना चाहिए। लेकिन विश्व व्यवस्था व्यक्तिगत संपत्ति के अधिकार में कोई बदलाव नहीं करना चाहती है और भारत सरकार भी आंख बंद करके उसी राह पर चल रही है। मद्रास उच्च न्यायालय ने एक निर्णय में कहा है कि परिवार की महिलाएं भले ही संपत्ति इकट्ठी करने में कोई प्रत्यक्ष योगदान ना दे किंतु संपत्ति में उसका भी अप्रत्यक्ष योगदान बराबर का होता है। इसलिए पति की संपत्ति में पत्नी का भी बराबर का हिस्सा होना चाहिए। मैं मानता हूँ कि मद्रास उच्च न्यायालय का निर्णय भी सही दिशा में एक अगले कदम के रूप में देखा जाना चाहिए। मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय और मद्रास उच्च न्यायालय ने ठीक दिशा में एक अगला कदम बढ़ाया है। इस दिशा में समाज में चर्चा होनी चाहिए। सरकार ऐसी चर्चाओं को प्रोत्साहित करे।

मैं बचपन से ही यह बात समझता रहा कि इस्लाम दुनिया का सबसे अधिक खतरनाक संगठन है। मुसलमानों को जब तक संगठनात्मक ढांचे से अलग नहीं किया जाता तब तक पूरी दुनिया खतरे में रहेगी। क्योंकि इस्लाम संगठनात्मक रूप से सबसे अधिक तेज गति से मजबूत हो रहा है। इनके संगठनात्मक ढांचे की सबसे मजबूत कड़ी शुक्रवार को सामूहिक नमाज के नाम पर बैठक है। इस संगठनात्मक एकत्रीकरण को कमजोर करना आवश्यक है। हम लोगों ने रामानुजगंज शहर में आज से 65 वर्ष पहले इस विषय पर सफलतापूर्वक प्रयोग किया। स्पष्ट है कि रामानुजगंज शहर में संगठित इस्लाम आज तक किसी प्रकार की कोई समस्या नहीं बन पाया। पूरे भारत में भी नरेंद्र मोदी के आने के बाद इस समस्या का समाधान शुरू हो गया है लेकिन दुनिया में अनेक ईसाई बहुल देश इसे समझ कर भी सावधान नहीं हुए। फ्रांस में आज जो कुछ भी देखने को मिल रहा है वह इसी बात का परिणाम है कि फ्रांस ने समय रहते इस्लाम के संगठनवाद के खतरे को नहीं समझा और इतने भयानक दंगे हुए। भारत ने कुछ वर्ष पहले ही शरणार्थियों के संबंध में दुनिया को नई राह दिखाई थी कि मानवता के नाम पर इस्लाम को सुरक्षा देना ठीक नहीं है जिस तरह फ्रांस से समाचार आ रहे हैं वे बहुत चिंताजनक हैं। क्योंकि जब तक मुसलमान कमजोर रहता है तब तक हमारी मानवता और दयालुता का लाभ उठाता है और ज्यों ही वह संगठित रूप से थोड़ा भी मजबूत हो जाता है तो सारी दयालुता और मानवता को तिलांजलि देकर अपने संगठन को मजबूत करने के

लिए मरने मारने को तैयार हो जाता है। यह कमजोरी सिर्फ फ्रांस की नहीं है बल्कि दुनिया के पूरे ईसाई समुदाय की है। यदि इतना सब कुछ देखते हुए भी अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा नरेंद्र मोदी से अमेरिका में इस्लाम के साथ मानवता के व्यवहार की सलाह देते हैं तो इसके लिए अमेरिका गलत है, फ्रांस गलत है, ईसाइयत गलत है। हिंदुत्व गलत नहीं है, भारत गलत नहीं है। भारत मानवता का भी अर्थ अच्छी तरह समझता है और किसी धार्मिक संगठनवाद की चालाकी का अर्थ भी समझता है। फ्रांस की घटनाएं को लेकर अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा की भूमिका मार्गदर्शक की होनी चाहिए और भारत को ओबामा से पूछना चाहिए कि आप इस्लाम को कैसा समझते हैं? मैं तो इतना हैरान हूँ कि जो बात रामानुजगंज के लोगों ने 70 वर्ष पहले समझ ली थी, उसे फ्रांस अब समझने लगा है और अमेरिका कब समझेगा पता नहीं?

स्वराज्य कथा

समानता और स्वतंत्रता के बीच बहुत लंबे समय से बहस छिड़ी हुई है। सारी दुनिया में यह टकराव दिखता है और भारत में तो विशेष रूप से यह टकराव है ही। सैद्धांतिक रूप से स्वतंत्रता प्रत्येक व्यक्ति का मौलिक अधिकार होता है। इस मौलिक अधिकार को कमजोर करने के लिए बुद्धिजीवी वर्ग समानता का नारा लगाते हैं। जबकि वे जानते हैं कि समानता मौलिक अधिकार नहीं है, सिर्फ संवैधानिक अधिकार है। लेकिन भारत के राजनेता समानता को भी मौलिक अधिकार के रूप में प्रस्तुत करते हैं। भारतीय संविधान के प्रियेम्बल (प्रस्तावना) में भी स्वतंत्रता की जगह समानता को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। इसलिए भारत के सभी राजनेता संविधान की दुहाई देकर समानता की आवाज उठाते हैं क्योंकि समानता का नारा ही ऐसा महत्वपूर्ण तरीका है जो समाज में वर्ग विद्वेष और वर्ग संघर्ष बढ़ा सकता है।यह वर्ग विद्वेष और वर्ग संघर्ष ही राजनेताओं के लिए अमृत का काम करता है। क्योंकि फूट डालना राज्य का सबसे अधिक सुविधाजनक तरीका माना जा सकता है और फूट डालने का तरीका है 'वर्ग संघर्ष' तथा वर्ग संघर्ष का सबसे अच्छा तरीका है 'समानता का प्रयत्न करना'।

दुनिया में कोई भी दो व्यक्ति ऐसे नहीं हैं जिनमें पूरी तरह समानता हो। असमानता तो प्राकृतिक रूप से होती ही है, कृत्रिम रूप से नहीं। जब दो व्यक्तियों की योग्यता एवं क्षमता प्राकृतिक रूप से असमान होती है तब आप उस असमानता को कम कैसे कर सकते हैं? आप किसी की मदद तो कर सकते हैं किंतु उसकी क्षमता और योग्यता को घटाकर समान नहीं कर सकते हैं। समानता का सिद्धांत ही पूरी तरह गलत है। राजनेताओं की नीयत खराब होने के कारण वह इस तरह का अनुचित प्रयत्न करते हैं। संविधान में स्वतंत्रता को महत्वपूर्ण स्थान देना चाहिए था लेकिन गलती से या बुरी नीयत से समानता शब्द को भी शामिल किया गया। भारत में कुछ लोग तो ऐसे भी हैं जो अमीरी रेखा की बात करते हैं। जो व्यक्ति अपनी क्षमता और योग्यता के आधार पर अधिक संपन्न बन

जाता है उसकी संपत्ति लेकर दूसरों में बांट देने का तरीका किसी भी दृष्टि से न्याय संगत नहीं है। संपत्ति का अधिकार व्यक्ति का मौलिक अधिकार है। ऐसी स्थिति में आप आपराधिक कार्यों को छोड़कर किसी भी आधार पर किसी की सहमति के बिना कोई संपत्ति नहीं ले सकते हैं। अमीरी रेखा की धारणा साम्यवादी विचारों के प्रभाव में आकर विकसित हुई हैं और अन्य राजनेताओं ने भी वर्ग संघर्ष के लिए इस शब्द का आज तक बहुत उपयोग किया है। उन्होंने इस शब्द को अपने लिए उपयोगी मानकर अपना लिया है। यदि आप ज्यादा ही आर्थिक सुधार के पक्षधर हैं तो आप कोई मध्य रेखा बना सकते हैं, लेकिन मध्य रेखा शब्द में कोई आकर्षण नहीं होने के कारण अमीरी और गरीबी रेखा शब्द को प्रचलित किया जाता है। भारत का प्रत्येक व्यक्ति अन्य अनेक लोगों की अपेक्षा अमीर भी होता है और कुछ दूसरे अन्य लोगों की अपेक्षा गरीब भी होता है। सामान्यतया किसी को भी गरीब या अमीर आप नहीं कर सकते हैं। धन लेकर बांटने का सिद्धांत तो ऐसे भी तो पूरी तरह अप्राकृतिक और गलत है।

गांधी अधिकतम स्वतंत्रता के पक्षधर थे और नेहरू अधिकतम समानता के। गांधी की हत्या भी इसीलिए हुई कि गांधी अधिक से अधिक स्वतंत्रता देना चाहते थे। यहां तक कि गांधी व्यक्तिगत स्वतंत्रता के भी प्रबल पक्षधर थे। गांधी ने प्रारंभ से ही लोक स्वराज को अपना उद्देश्य बताया था। जिसे अन्य कोई भी राजनेता मानने के लिए तैयार नहीं थे। गांधी ने कहा था कि आर्थिक और राजनीतिक सत्ता गांव तक विकेंद्रित कर दी जाए और फिर गांव में भी कोई प्रस्ताव सबकी सहमति से ही पारित हो। गांधी के मरते ही हमारे राजनेताओं ने लोकतंत्र की परिभाषा लोक नियंत्रित तंत्र से बदलकर लोक नियुक्त तंत्र कर दिया। गांधी सुरक्षा और न्याय तक तंत्र को सीमित करना चाहते थे लेकिन हमारे नेताओं ने सुरक्षा और न्याय की जगह जनकल्याण के कार्यों को महत्व देकर अनुचित और अधिकाधिक सरल मार्ग अपने लिए बना लिया।परिणाम हुआ कि स्वतंत्रता के बाद हर मामले में व्यक्तिगत स्वतंत्रता भी कमजोर हुई और असमानता भी बढ़ती चली गई। समानता का सिद्धांत पूरी तरह असफल और अप्राकृतिक धारणा है, बढ़ती असमानता उसी असफल सिद्धांत का परिणाम है। गांधी इस परिणाम की अच्छी तरह कल्पना करते थे। आज जो राजनैतिक सत्ता का अधिकाधिक केंद्रीयकरण हो रहा है वह इसी असमानता दूर करने के प्रयत्न का परिणाम है। आज भारत की स्थिति ऐसी हो गई है कि हिटलर तक को अच्छा मानने वालों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही हैअब हमें इस विषय पर नए तरीके से सोचना होगा। संविधान से समानता शब्द को निकालकर स्वतंत्रता शब्द को प्रियेम्बल (प्रस्तावना) में शामिल किया जाना चाहिए। संविधान में मौलिक अधिकारों में से संपत्ति को निकाल दिया गया है। जबकि सिद्धांत रूप से संपत्ति का अधिकार प्रकृति प्रदत्त अधिकार होते हैं, संविधान प्रदत्त अधिकार नहीं। इसलिए संपत्ति को मौलिक अधिकारों की सूची में जोड़ देना चाहिए। किसी भी व्यक्ति पर किसी भी प्रकार का टैक्स हटाकर

सिर्फ एक सुरक्षाकर लिया जाना चाहिए। यह सुरक्षाकर भी कुल संपत्ति के 2% वार्षिक से अधिक नहीं होना चाहिए।यह सुरक्षाकर आम लोगों की सहमति से बनने वाले संविधान के आधार पर होना चाहिए। स्पष्ट है कि संविधान निर्माण में आम लोगों की प्रत्यक्ष सहमति होनी चाहिए। इस तरह हम आदर्श और स्वतंत्र समाज बनाने में दुनिया का मार्गदर्शन कर सकते हैं।

मेरा आप सब से निवेदन है कि हम समानता के घातक प्रयत्न से बचकर निकलें और संविधान में स्वतंत्रता को महत्वपूर्ण स्थान दें।

जिसने जैसा देखा : (मुनि जी की जीवन पर आधारित)

बजरंग मुनि के समावेशी व्यक्तित्व पर एक दृष्टि

बजरंग मुनि जी के बारे में हम लगभग 15 वर्षों से सुनते आए हैं। कभी व्यवस्था परिवर्तन वाला पर्चा तो कभी ग्राम सभा सशक्तिकरण वाला पम्पलेट पर्चा, मुझे कभी दिल्ली, कभी इलाहाबाद और कभी गाजीपुर में ही जे पी सिंह, कभी राजेन्द्र मिश्रा के हाथों से तो कभी अनोखेलाल यादव के हाथों मिल जाया करता था। पर्चा पढ़ने पर लगता था कि बजरंग मुनि गांधी, जय प्रकाश नारायण या अन्ना हजारे के विचारों से प्रभावित थे। लेकिन इनके बारे में असल जानकारी 1 से 15 सितम्बर 2019 के दौरान ऋषिकेश में आयोजित ज्ञानोत्सव कार्यक्रम में हुई। उस कार्यक्रम के बारे में डॉ जे पी सिंह ने यही बताया था कि उस कार्यक्रम में आप चाहें तो एक, दो या लगातार पन्द्रह दिन भी रह सकते हैं। उस ज्ञान उत्सव में विभिन्न विचारधारा के लोगों को आमंत्रित किया गया था। अम्बेडकरवादियों से लेकर कांग्रेसी, भाजपाई, कम्युनिस्ट, सोशलिस्ट, दक्षिणपंथी,आरएसएस, मध्यमार्गी, आनंदमार्गी, गांधीवादी, लोहियावादी, आध्यात्मिक सांस्कृतिक,आस्तिक–नास्तिक, अन्नावादी, एनजीओ, जन संगठन, ट्रेड यूनियन, महिला संगठन आदि संगठनों संस्थाओं को आमंत्रित किया गया था। 15 दिन में 30 विषयों पर विचार मंथन निश्चित किया गया था। सभी वक्ताओं को निर्धारित समय ही मिलता था। विचार मंथन का पहला सत्र सुबह 9 बजे से 1 बजे तक और द्वितीय सत्र दोपहर 2 बजे से शाम 6 बजे तक सौहार्द्रपूर्ण वातावरण व अनुशासन के दायरे में चलता था। पूरे कार्यक्रम को देश प्रख्यात मौलिक विचारक बजरंगमुनि स्वयं लीड करते थे। उस कार्यक्रम के दौरान ही मैं मुनि जी से जुड़ा और अब तक उनसे जुड़कर काम कर रहा हूँ। किसी व्यक्ति को जानने के लिए 15 दिन का समय पर्याप्त होता है। मुझे लगा कि मुनि जी किसी एक विचार धारा के खूंटे में बंधकर रहने वाले व्यक्ति नहीं हैं। बल्कि एक स्वतंत्र मौलिक विचारक हैं। वह गांधी जैसा जीवन वर्तमान में जीते हैं। मौलिक विचारक बजरंग मुनि का जीवन राहुल सास्कृंत्यायन एवं स्वामी सहजानंद सरस्वती से मिलता–जुलता है। क्योंकि बजरंग मुनि ने न कभी कोई किताब पढ़ी और न ही किसी विश्वविद्यालय में पढ़ाई की। उन्होंने जो कुछ भी अनुभव किया, उसी के

आधार पर समाज का विश्लेषण किया और अपने विचार दिए। मुनि जी 13 वर्ष की उम्र में ही दुनियादारी के बारे में समझने लगे। मुनि जी अत्यंत सरल स्वभाव के हैं। आर्थिक रूप से काफी समृद्ध हैं, लेकिन उनके मन में कभी धन की सम्पन्नता नहीं झलकती। आपको कभी ऐसा नहीं लगेगा कि आप इतने अमीर आदमी के सामने बैठे हुए हैं। मुनि जी के सम्पर्क में आने के बाद यह पता चला कि मुनि जी को समाज बदलने की प्रेरणा 13 वर्ष की उम्र में ही मिल गयी। इसमें किसी व्यक्ति की कोई भूमिका नहीं, बल्कि हमको ईश्वरीय लगता है। मैंने मुनि जी के ऋषिकेश के ज्ञानोत्सव कार्यक्रम के तीसरे दिन ही कहा कि यह पहले एक समाजशास्त्री लगते हैं, बाद में विचारक। लेकिन मुझे अब लगता है कि यह एक मौलिक विचारक है। क्योंकि परिवार में तेरह वर्ष के बालक की बात को कौन गम्भीरता से लेता है। मुझे लगता है कि यदि मुनि जी अपनी ऊर्जा राजनीति में लाभ के लिए लगाते तो निश्चित तौर पर एक बड़े राजनेता होते, यदि वही ऊर्जा आर्थिक क्षेत्र में लगाते तो बड़े कार्पोरेट घराना होते। लेकिन इनके आभा मण्डल का प्रभाव इनके बच्चों पर पड़ा इसलिए उनके बच्चे इस क्षेत्र में आगे बढे हैं। मुनि जी किसी को नाराज नहीं करते बल्कि खराब से खराब व्यक्ति को भी अपने साथ जोड़े रखते हैं। जब उस व्यक्ति का मूल्यांकन करेंगे तो वह आदमी अपने पास रखने लायक नहीं होता, इसके बावजूद भी रखते हैं। वैसे बजरंग मुनि नेहरू और नेहरू परिवार, डॉ भीमराव अम्बेडकर, कम्युनिस्ट, इस्लाम के घोर विरोधी हैं। लेकिन उनका मानना है कि सारे मुसलमान खराब नहीं होते। और सारे हिन्दू अच्छे नहीं होते हैं। गांधी के विचार को अच्छा मानते हैं, लेकिन गांधी गांव को मजबूत करने के साथ–साथ संवैधानिक दर्जा देने की बात करते हैं। वहीं पर बजरंग मुनि गांधी से भी एक कदम आगे बढ़ कर परिवार को सशक्त बनाने व संवैधानिक दर्जा देने की बात करते हैं। बजरंग मुनि का जन्म एक मारवाड़ी सनातनी वैश्य परिवार में छत्तीसगढ़ के रामानुजगंज शहर में हुआ। समाज में व्याप्त छुआछुत आडम्बरों के कारण उनका हिन्दू धर्म से मोहभंग हो गया और वह इसाई धर्म समझने चर्च आने जाने लगे थे किन्तु अन्ततः आर्य समाजी हो गए। लेकिन शहर के लोगों ने उनको पुनः हिन्दू बनाया। लेकिन आज भी उनके ऊपर आर्य समाज का प्रभाव है। एक तरफ जहां राहुल सास्कृंत्यायन उच्च कुल के ब्राह्मण के घर में जन्म लिए और बुद्धिस्ट होते हुए अन्तिम समय में कम्यूनिस्ट हो गए थे। उसी प्रकार स्वामी सहजानंद सरस्वती भी भूमिहार ब्राह्मण के घर पैदा हुए। फिर दण्डी स्वामी हुए, फिर कांग्रेस में गए। वहां उनका बापू से टकराव हुआ। फिर किसान सभा का गठन करना और अन्तिमसमय में कम्युनिस्ट होना उनके जीवन की प्रमुख घटनाओं में से एक है।। अगर दोनों महापुरूषों से इनकी तुलना किया जाए तो तीनों व्यक्तियों का जीवन एक तरह का है। जबकि दो लोग कम्युनिस्ट हो गए, वहीं बजरंग मुनि इसके ठीक उलट कम्यूनिस्ट विरोधी हो गए। बजरंग मुनि ने जबसे होश संभाला है वह हमेशा सामाजिक जीवन में सक्रिय रहे हैं। शुरू में सोशलिस्ट रहे, फिर जनसंघ में गए, फिर जनता पार्टी में गए और इसी दौरान इमरजेन्सी में 18 माह जेल में भी रहे। उनका अचानक

राजनीति से मोह भंग हो गया और 1984 में राजनीति से संन्यास ले लेते हैं। इसी दौरान नगर पालिका रामानुजगंज के वो दो बार अध्यक्ष रहे। अध्यक्ष रहते हुए ही उन्होंने सामाजिक अपराध नियंत्रण के लिए कुछ नए प्रयोग किए। अब लोक स्वराज्य के लिए लगातार प्रयत्न करना ही उनकी दिनचर्या हो गयी है। इस दौरान उन्होंने दर्जनों किताबें लिखी। ज्ञान तत्व, मुनि मंथन, नई दिशा, भारत का भावी संविधान आदि पुस्तक का लेखन कार्य समाज को नई दिशा देने के लिए काफी है। मुनि जी से आपका किसी तरह का वैचारिक मतभेद होने के बावजूद भी वह संवाद बंद नहीं करते बल्कि विभिन्न विचारधाराओं के साथ लगातार संवाद करते रहते हैं। मुझे तो ऐसा लगता है कि वर्तमान समय में बजरंग मुनि के पास जो कुछ भी ज्ञान का भण्डार है, उसको संजोकर रखना व उस पर शोध कार्य करना, उस पर चिंतन मनन करने के साथ–साथ देश के विश्वविद्यालयों, कॉलेजों में पढ़ाना व इनके ऊपर सेमिनार, गोष्ठी एवं चर्चा व परिचर्चा कराते रहना चाहिए। साथ ही जिस विश्वविद्यालय में एमएसडब्ल्यू का कोर्स होता हो, उन बच्चों को मुनि जी के कार्यक्षेत्र में भेज कर उस पर शोध कराना, उस पर किताब लिखने आदि कार्य होते रहना चाहिए।

प्रेमनाथ गुप्ताः 9651742406

समीक्षा

संजय भाई ने प्रेम नाथ जी द्वारा मेरी समीक्षा में लिखा गया एक लेख भेजा है। आप मित्रों ने मेरी जो प्रशंसा की है उससे मेरा उत्साह बढ़ा है। सच्चाई यह है कि मैं मार्क्स या साम्यवाद का अन्ध विरोधी नहीं हूँ। मैंने बचपन से ही यह निष्कर्ष निकाला था कि भारत सहित पूरी दुनिया में श्रम शोषण के नए–नए तरीके खोजे जा रहे हैं। धनी और संपन्न लोग बहुत अधिक संपत्ति इकट्ठी कर रहे हैं जबकि श्रमजीवी गरीब लगातार उनकी तुलना में बहुत पीछे होते जा रहे हैं। दुनिया की प्रमुख समस्याओं में श्रम शोषण और बढ़ती आर्थिक विषमता का बहुत अधिक योगदान है। इन समस्याओं का समाधान ही मार्क्सवाद है। मुझे महसूस होता है कि वर्तमान मार्क्सवाद इन समस्याओं का समाधान ना खोज कर इन समस्याओं के नाम पर सत्तारूढ़ होने का प्रयास भर कर रहा है। जबकि मैं इन दोनों समस्याओं को प्रमुख समस्या मानकर समाधान बताने का प्रयास कर रहा हूँ। इसलिए मेरा आप सब से निवेदन है कि आप अपने विचार में संशोधन करिए। मैं आप मित्रों से लगातार यह भी उम्मीद करता हूँ कि आप मेरी गलतियों को सामने लाइए जिससे समाज के बीच मुझे भी अपनी बात स्पष्ट करने या सुधारने का अवसर मिल सके। मैं लगातार प्रयत्न करूंगा कि आप मुझे जैसा सोचते हैं उससे भी अधिक आगे जाने की कोशिश करुं। इस संबंध में आप सब जो भी समीक्षा करेंगे और प्रश्न करेंगे उस पर आगे की चर्चा जारी रहेगी। उत्तर काल काल जी ने बजरंग मुनि जी पर कुछ संदेह उठाते हुए टिप्पणी की है जो मुझे सत्य प्रकाश राजपूत जी ने भेजी है। वह टिप्पणी इस प्रकार है :–

"बजरंग मुनि जी निसंदेह सरल ह्रदय हैं। मगर जो सहज होता है उसे किसी का न समर्थक होना चाहिए न विरोधी। यद्यपि मैं केवल संघ और बीजेपी का विरोधी हूँ क्योंकि वह महत्वाकांक्षी लोगों का जमावड़ा है। मूल्यहीन राजनीति सत्ता सुख देती है देशहित नहीं करती। जनहित तो अब वैश्विक पटल से गायब है, कुछ नेता देशहित में लगे हो सकते हैं। देशहित जनहित अलहदा हैं। जनहित चरित्र निर्माण है देशहित सुविधा निर्माण है और धन तथा शस्त्र संग्रह है। जनहित केवल शुध्द चरित्र निर्माण है जो अब किसी भी नेता दार्शनिक सुधारक या बाबा के बूते के बाहर है। चरित्र में पूंजी गौण होती है जबकि आज सबकुछ पूँजी है। विचारक बजरंग मुनि की पूँजी का श्रोत क्या है मुझे पता नहीं लेकिन लगता है कि वह चंदा टाइप या शासकीय फंड से ओत प्रोत हैं। यह श्रम जनित धन नहीं हो सकता और बस यही वैश्विक त्रासदी है कि श्रमहीन धन हर आदमी के पास है केवल सीमान्त कृषक को छोड़कर। धनिक कृषक को पचास सब्सिडी हैं। चालू आदमी को बीस स्कीम हैं। चरित्रवान के हाथ केवल श्रम है और इस त्रासदी को ठीक करने का कोई उपाय नहीं है।"

संजय तांती – मैं भी बजरंग मुनि जी के साथ संपर्क में रहता हूँ। मैं कई महीने तक उनके कार्यक्षेत्र रामानुजगंज में भी रहा हूँ। मैंने स्वयं अनुभव किया है कि मुनि जी ने अपना जीवन खेतों में बिताया। उन्होंने स्वयं खेती भी की और श्रम भी किया। सन 1995 तक उनकी और परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत खराब बताई जाती है। 1997 के बाद मुनि जी के लड़के घर छोड़ कर चले गए और उन्होंने बाहर जाकर अपना स्वतंत्र व्यापार किया। उसके बाद उनके लड़कों ने बहुत अच्छी आर्थिक उन्नति की लेकिन मुनि जी का उस संपत्ति से या उस व्यापार से कोई लेना देना नहीं है। तीन वर्षों से तो मुनि जी लगभग संन्यास का जीवन बिता रहे हैं। वैसे भी मुनि जी के परिवार में यह कानून बना है कि परिवार के किसी भी सदस्य को व्यक्तिगत संपत्ति रखने का अधिकार नहीं है। उस आधार पर भी मुनि जी का कुछ नहीं है और अब तो उन्होंने सब कुछ छोड़ ही दिया है। मुनि जी का व्यक्तिगत खर्च परिवार के लोग उठाते हैं और संस्थागत खर्च उनके रिश्तेदार तथा कुछ मित्र मिलकर उठाते हैं। अब तो मुनि जी का स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता है। लेकिन उनके परिवार के लोग उनके स्वास्थ्य पर भी बहुत ध्यान देते हैं। मुनि जी ने अपने जीवन में कभी कोई चंदा इकट्ठा नहीं किया ना कोई सरकार से सहायता ली है इसलिए हमारे मित्र ने जानकारी के अभाव में चंदा और सरकारी अनुदान की बात लिखा है। इस संबंध में यदि आप लोग कुछ और जानना चाहेंगे तो प्रश्न कीजिएगा क्योंकि बजरंग मुनि जी का जीवन एक खुली किताब की तरह है और आप कुछ भी प्रश्न पूछ सकते हैं। जितना मैं जानता हूं उतना उत्तर मैं दे दूंगा या आवश्यकता पड़ने पर मुनि जी से पूछ लूंगा।

आचार्य पंकज–बजरंग मुनि जी के विषय में आचार्य पंकज जी ने बताया कि मुनि जी ना साम्यवाद विरोधी हैं और ना ही साम्यवाद समर्थक। मुनि जी को हम नॉन कम्युनिस्ट कह सकते हैं, एंटी कम्युनिस्ट नहीं। क्योंकि मुनि जी साम्यवाद के मूल सिद्धांत श्रम शोषण मुक्ति तथा आर्थिक समानता के साथ–साथ व्यक्तिगत संपत्ति के भी पूरी तरह विरुद्ध हैं। मुनि जी ने इन तीनों विषयों पर बहुत अच्छा प्रयोग भी किया है। इसलिए हम मुनि जी को साम्यवाद समर्थक भी कह सकते हैं। लेकिन मुनि जी वर्ग–संघर्ष, हिंसा और सत्ता के केंद्रीयकरण के बहुत खिलाफ हैं। मुनि जी परिवारों को सब प्रकार की राजनीतिक तथा आर्थिक स्वतंत्रता देने के पक्षधर हैं, इसलिए मुनि जी को एंटी कम्युनिस्ट भी कह सकते हैं। लेकिन वास्तव में वह नॉन कम्युनिस्ट ही हैं। आचार्य जी के अनुसार प्रेमनाथ जी या मैं मुनि जी को गहराई से नहीं समझ पाए। मध्य प्रदेश सरकार ने भी मुनि जी को खतरनाक नक्सलवादी घोषित किया था और उन पर प्रशासनिक कार्यवाही भी की थी। मुनि जी ने उच्च न्यायालय जबलपुर में जाकर यह बयान दिया था कि नक्सलवादी होने के कारण आप मुझे तब तक अपराधी नहीं कह सकते जब तक मैंने किसी कानून का उल्लंघन ना किया हो। न्यायालय में यह बात स्वीकार करना बहुत हिम्मत का काम था। इसीलिए आचार्य जी का यह कहना कि मुनि जी के विषय में और गंभीरता से समझने की जरूरत है।

एक पाठक विचित्र कुमार सक्सेना जी ने भी बजरंग मुनि जी पर कुछ टिप्पणी की है। उन्होंने यह लिखा है :–

"बात जो सत्य है वही कहेंगे। मुनि जी विभिन्न विचारधाराओं का मिश्रण है क्योंकि कभी गांधी के लोक स्वराज्य का समर्थन करते दिखते हैं, तो कभी भारत के लिए नया संविधान बनाते दिखते हैं। अंबेडकर जी के विचारों से कभी पटरी नहीं बैठती है और सावरकर जी को तो शायद वह सुनना समझना ही नहीं चाहते हैं। नेहरू एवं उनके परिवार को, उनकी नीतियों को मुनि जी ने कभी पसंद नहीं किया। परंतु मुझे लगता है कि सरदार वल्लभ भाई पटेल के साथ मुनि जी न्याय नहीं कर पा रहे हैं। जनसंघ से और संघ से उनके कैसे संपर्क रहे हैं। कभी कभी नरेन्द्र मोदी जी और पू0 मोहन भागवत जी के हाथों देश को सौंप कर निश्चिंत हो जाते हैं।हिंदुत्व रहना चाहिए, परन्तु हिंदुओं को संगठित नहीं देखना चाहते। पर्यावरण बचाने के लिए बृक्षारोपण और जल संरक्षण इत्यादि में मुनि जी को कोई रुचि नहीं। यह काम सरकार करे, समाज की वला से।

हाँ, लेकिन मुनि जी पूर्ण रूप से सहिष्णु व्यक्ति हैं। मैं मानता हूँ कि ऐसे व्यक्तित्व का हम सभी को पूरा सदुपयोग करना चाहिए।"

संजय तांती – सक्सेना जी ने जो लिखा, वह बिल्कुल सही है। मुनि जी ने जो कुछ भी सोचा उसमें किसी एक का अनुसरण करना नहीं है, बल्कि स्वतंत्रता पूर्वक निष्कर्ष निकाले गए हैं। मैंने मुनि जी से इस संबंध में कई बार पूछा कि आप कभी पटेल की आलोचना करते हैं तो कभी प्रशंसा करते हैं।

आप सावरकर की कभी आलोचना करते हैं तो कभी प्रशंसा भी करते हैं। आप साम्यवाद को दुनिया की सबसे अधिक खतरनाक विचारधारा मानते हैं और अहिंसक नक्सलवाद का भी समर्थन करते हैं। यह क्या विरोधाभास है? तो मुनि जी ने बताया कि जब गांधी और पटेल की तुलना होती है तब मुनि जी गांधीजी के पक्ष में और पटेल के विरुद्ध बोलते हैं, लेकिन जब पटेल और नेहरू की तुलना होती है तो मुनि जी पटेल के पक्ष में बोलते हैं। इसी तरह जब सावरकर और नेहरू की तुलना होती है तो मुनि जी नेहरु के पक्ष में बोलते हैं और जब सावरकर और कम्युनिस्टों की तुलना होती है तो मुनि जी सावरकर के पक्ष में बोलते हैं। जब तुलनात्मक विश्लेषण होता है तब निष्कर्ष बदल सकते हैं। साम्यवाद के विषय में भी मुनि जी वर्ग–संघर्ष, श्रम–शोषण तथा हिंसा के मामले में साम्यवाद का विरोध करते हैं। लेकिन राजनीति में प्रतिबद्धता और इमानदारी की जब चर्चा होती है तब साम्यवादियों की प्रशंसा करते हैं। मार्क्सवाद के सिद्धांत राज्य मुक्त व्यवस्था के मुनि जी घनघोर प्रशंसक हैं, यहां तक कि गांधी से भी अधिक। इसलिए मुनि जी का चिंतन संकीर्ण नहीं, बल्कि यथार्थवादी माना जा सकता है।

राजेंद्र कुमार जी तथा ओम प्रकाश वर्मा जीने बजरंग मुनि जी के विषय में लिखा है कि वह एक कन्फ्यूज्ड आदमी हैं अर्थात् अनिश्चय के शिकार हैं। लेकिन मैं उनके इस निष्कर्ष को सही नहीं मानता हूँ। कन्फ्यूज्ड उस व्यक्ति को माना जाता है जो अंत तक किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंच पाता हो। लेकिन बजरंग मुनि जी के लिए ऐसा सोचना उचित नहीं है। यह बात प्रमाणिक रूप से सत्य है कि उन्होंने आज से 70 वर्ष पूर्व भी यदि किसी विषय पर निश्चय पूर्वक जो कुछ कहा या लिखा वह आज भी उनके लिए उसी तरह सच है। उनके निकाले गए निष्कर्षों में से अभी तक एक भी निष्कर्ष ना तो गलत सिद्ध हुआ है और ना ही उन्होंने उस निष्कर्ष को गलत माना है। यदि किसी विषय पर वह रिसर्च करते रहे तो रिसर्च करना कन्फ्यूजन नहीं कहा जा सकता। मुनि जी ने भी रिसर्च के बाद जो सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं के विश्वस्तरीय समाधान दिए हैं, वह बहुत महत्वपूर्ण है। भले ही आप मित्रों को उसमें कन्फ्यूजन लगे लेकिन मैं स्पष्ट करना चाहता हूँ कि कन्फ्यूजन मुनि जी में नहीं, उनके निष्कर्षों में नहीं, बल्कि आप मित्रों की सोच में है।

ज्ञानेन्द्र आर्य–प्रेमनाथ जी का यह मन्तव्य कि सहजानंद और राहुल सांकृत्यायन विभिन्न विचारधाराओं पर प्रयोग करते हुए जीवन के अंतिम पड़ाव पर कम्यूनिस्ट हो परिपूर्ण हो गए। मेरी समझ से ठीक नहीं।

एष्णाओं (इच्छाओं) का पीछा करने वाले का स्वभाव ही विद्रोही हो जाता है। उसकी यह धारणा स्थाई भाव बन जाता है कि कोई स्थापित व्यवस्था उनकी इच्छापूर्ति में बाधक है। वह स्थापित व्यवस्था किसी अन्य व्यक्ति को मेरा स्थान दे रहा है, संसाधनों का समान वितरण नहीं है.... ऐसा विचार करते हुए वह साम्यवाद के विद्रोही, कब्जा कर ठीक करने वाले भाव के कारण कम्यूनिस्ट होता है।

जबकि मुनि जी सहज ही योगदर्शन में वर्णित ''तदा दृष्टुः स्वरूपेऽवस्थानम्''में स्थित हो, सम्यकदर्शी हैं। मुनि जी राज्यसभा की सीट (शक्ति) राजकीय सम्मान (लोकेषणा) और अर्थोपार्जन (वित्तेष्णा) के पीछे छिपे अंधकार को पहचान उससे दूरी बना ली। बिगड़ते सामाजिक मूल्यों के लिए वह व्यवस्था को उत्तरदाई मानते हैं ना कि चरित्र पतन की फर्जी मनगढ़ंत कहानियों को। साम्यवाद का यह मौलिक सिद्धांत उन्हें कम्यूनिस्ट इसलिए नहीं बना पाएगा क्योंकि इसे ठीक करने के लिए कब्जाने या शक्ति अर्जित करने के लिए संगठन आदि बनाने के पीछे के परिणाम को पूर्व के किसी भी विचारक से बेहतर समझते हैं। मुनि जी का यथार्थदर्शन ना केवल राजनैतिक आर्थिक सामाजिक बल्कि मानविकी विज्ञान को भी एक नया आयाम प्रदान कर रही है।

शास्त्रवर्णित विधियों का स्वाध्याय ना होते हुए भी मुनि जी के प्रारम्भिक जीवनकाल में ही संन्यास जैसी परमावस्था उपस्थित हो गई थी। उन्हें कम्यूनिस्ट होने कि क्या आवश्यकता जब वह ''समदर्शी'' होने के प्रपंच से अलग ''सम्यकद्रष्टा''हैं। एक संन्यासी की पहचान हो भी क्या सकती है 'सबके कल्याण के लिए सतत क्रियाशील प्रेम से परिपूर्ण ह्दय' के अलावा।

उत्तरार्ध

मैंने पिछले अंक में अपने संस्था की आर्थिक व्यवस्था के विषय में लिखा था। उसका संक्षिप्त रूप इस प्रकार है :–

1) एक ट्रस्ट बनाया गया है ''मार्गदर्शक सामाजिक शोध्र संस्थान''जिसकी सदस्यता के लिए 50,000 रुपये वार्षिक या 5,00,000 रुपये आजीवन धन देना आवश्यक है। ट्रस्ट ज्ञान यज्ञ परिवार तथा अन्य सामाजिक गतिविधियों में आर्थिक सहयोग करेगा।

2) ज्ञानयज्ञ परिवार की सदस्यता के लिए प्रत्येक सदस्य यह घोषित करेगा कि वह ज्ञानयज्ञ परिवार के लिए वर्ष में न्यूनतमया आजीवन के लिए कितनी राशि दान देने की क्षमता रखता है। जो सदस्य वार्षिक 100 (एक सौ रुपए) तक दान देते हैं अथवा यदि आजीवन 1500 (पंद्रह सौ रुपए) दान देते हैं तो वह साधारण सदस्य मान लिए जाएंगे और जो सदस्य कम से कम 1500 (पंद्रह सौ रुपए) या इससे अधिक वार्षिक अथवा एकमुश्त 10,000 (दस हजार रुपए) आजीवन सदस्यता हेतु दान देते हैं तो वह सक्रिय सदस्य मान जाएंगे।

3) जो सदस्य 100 (एक सौ रुपए) से भी कम राशि का दान देंगे उनका भी दान स्वीकार किया जाएगा।

4) सभी दानदाता ट्रस्ट के अकाउंट नंबर (आई.सी.आई.सी.आई. बैंक) 777305500185 में दान दे सकते हैं। जो लोग ज्ञानयज्ञ परिवार के सदस्य बनना चाहें वे भी ट्रस्ट के अकाउंट में धन

दे सकते हैं और ज्ञानयज्ञ परिवार के रसीद से भी दे सकते हैं।

5) ट्रस्ट और ज्ञानयज्ञ परिवार की सदस्यता से प्राप्त धन निम्नलिखित कार्यों पर खर्च होगा :–

1) रामानुजगंज में ज्ञानयज्ञ परिवार द्वारा संचालित स्कूल,

2) रामानुजगंज की धर्मशाला में सहायता,

3) ज्ञान तत्व पाक्षिक पत्रिका,

4) दिल्ली में कार्यालय तथा संविधान मंथन का कार्यक्रम,

5) वर्ष में एक या दो बार बड़े स्तर पर यज्ञ,

6) विचार मंथन के कार्यक्रम,

7) बजरंग मुनि जी के विचार एवं कार्य,

8) कुछ अन्य सामाजिक कार्यक्रम।

Note :– जो सदस्य न्यूनतम 100 (एक सौ रुपए) वार्षिक या न्यूनतम 1500 (पंद्रह सौ रुपए) से अधिक दान या सदस्यता की घोषणा करेंगे, उन्हें आधिकारिक रूप से ज्ञान तत्व पाक्षिक पत्रिका मिलता रहेगा एवं अन्य लोगों को आर्थिक स्थिति के अनुसार निःशुल्क ज्ञान तत्व दिया जाएगा।

आपसे निवेदन है कि आप यथाशक्ति ट्रस्ट या ज्ञानयज्ञ परिवार को दान देने की कृपा करें।

भावी भारत का संविधान सहयोग राशि ₹ 50	वर्तमान संविधान की खामियों एवं उसके निराकरण का सुंदर विश्लेषण करती, देशभर के तमाम विद्वानों एवं बुद्धिजीवियों के साथ निरंतर 20 वर्षों तक शोध के उपरांत लिखी इस पुस्तक की लोकप्रियता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि अब तक तीन बार इसे अलग–अलग संस्थानों के द्वारा छपवाया जा चुका है।
मुनि मंथन निष्कर्ष सहयोग राशि ₹ 50	श्रद्धेय मुनि जी के 70 वर्षों तक देशभर के मूर्धन्य विद्वानों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं के साथ निरंतर 'विचार मंथन' के निष्कर्षों को सूत्र रूप में समेटे, इस पुस्तक को तैयार होने के बाद भी 4 वर्षों तक इसमें संकलित सिद्धांतों पर देशव्यापी विमर्श के उपरांत यह पुस्तक आपके सामने आ पाई है।
मौलिक व्यवस्था का विचार सहयोग राशि ₹ 50	यह पुस्तक 'व्यवस्था' पर तमाम वैश्विक संदर्भो के आधार पर गहन विश्लेषण प्रस्तुत करती है। समाज के प्रत्येक इकाई के स्वतंत्रता सुरक्षा के साथ पोषण की गारंटी पर एक रिसर्च मॉडल के रूप में है यह पुस्तक है।
बस अब बहुत हो चुका सहयोग राशि ₹ 50	व्यवस्था की खामियों एवं उसके समाधान के लिए आवश्यक प्रभावी विचार एवं उद्दीपक ऊर्जा को अपने में समेटे इस पुस्तक को लिखा है अशोक गाड़िया जी ने। यह पुस्तक 'व्यवस्था परिवर्तन' के वैचारिक पृष्ठभूमि को तैयार करती है।
मुनि मंथन सहयोग राशि ₹ 10	श्रद्धेय मुनि जी के विचारों को गागर में सागर सा अपने में समेटे सीधे सरल समझ में आने वाली शैली में लिखी यह पुस्तक, एक रंगकर्मी निर्देशक निर्माता एवं लेखक आनंद गुप्ता जी की रचना है। शराफत से समझदारी की ओर जाने वाले मार्ग का पथ प्रदर्शक के रूप में या पुस्तक पठनीय है।
रामानुजगंज एक आवाज सहयोग राशि ₹ 10	अपने में श्रद्धेय बजरंग मुनि जी के जीवन की झलक समेटे इस पुस्तक को श्री नरेंद्र जी ने नाटक की शैली में लिखा है। सामाजिक समस्याओं एवं उसके निराकरण पर पात्रों के माध्यम से यथार्थ को नए रंग रोगन में प्रस्तुत करती है यह पुस्तक।
एक ही रास्ता सहयोग राशि ₹ 10	नुक्कड़ नाटक गीत संगीत जैसे सांस्कृतिक विधाओं से लोगों को समझदार बनने की प्रेरणा देने के लिए मुनि जी ने अपनी युवावस्था से ही प्रयास शुरू कर दिए थे। उन तमाम गीतों एवं दृश्यों को नाटक के रूप में इस पुस्तक में लिपिबद्ध किया गया है।

इन पुस्तकों का एक सेट मंगाने के लिए मात्र ₹ 100 का आर्थिक सहयोग और अतिरिक्त डाक खर्च देना होगा। इन पुस्तकों को एक साथ मंगाने के लिए सम्पर्क करें–8318621282, 7869250001, 9617079344

हमारी संस्थाएँ

- मार्गदर्शक सामाजिक शोध संस्थान
- ज्ञान यज्ञ परिवार

संस्थान के कार्य • समाज विज्ञान पर विश्वव्यापी रिसर्च तथा निष्कर्ष निकालना।

परिवार के कार्य

- देश भर में ज्ञान केन्द्रो का इस तरह विस्तार कि वहाँ स्वतंत्र विचार मंथन हो तथा संवाद प्रणाली विकसित हो।

कार्यक्रम

- ज्ञान चर्चा-प्रतिदिन शाम साढ़े आठ से साढ़े नौ बजे तक किसी एक पूर्व घोषित विषय पर स्वतंत्र वेबिनार।

महायज्ञ • वर्ष में एक बार या दो बार बड़े सामुहिक यज्ञ का आयोजन।

मार्गदर्शक मंडल

- ऐसे न्यूनतम पाँच सौ लोगों की टीम तैयार करना जो समाज विज्ञान पर रिसर्च करने की क्षमता रखते हैं।

ज्ञान कुंभ

- वर्ष में दो बार पंद्रह-पंद्रह दिनों के ज्ञान कुंभ जिसमें मार्ग दर्शक मंडल के लोग स्वतंत्र विचार द्वारा प्रतिदिन दो-दो विषयों पर निष्कर्ष निकाल कर समाज को दें।

माध्यम

- ज्ञान तत्व पाक्षिक पत्रिका
- यू ट्यूब चैनल
- फेसबुक एप से प्रसारण
- इंस्टाग्राम
- वाट्सएप ग्रुप से प्रसारण
- टेलीग्राम
- जूम एप पर वेबिनार
- कू एप

ज्ञानतत्व पाक्षिक पत्रिका का माह में दो प्रति का प्रकाशन सुचारू रूप से होना शुरू हो गया है। इसकी सहयोग राशि रू. 100/- वार्षिक अभी तय किया गया है। लेख प्रस्तुती आदि पर सुझाव अवश्य दें।

पंजीकृत पाक्षिक
पंजीकरण क्रमांक-68939/98

डाक पंजीयन क्रमांक- छ.ग./रायगढ़/010/2022-2024

प्रति,

श्री/श्रीमती ____________________

____

____

____

संदेश

वर्तमान संसदीय लोक तंत्र में तो संसद एक जेल खाना है। जहां हमारा भगवान रुपी संविधान कैद है। भगवान को जेलखाने से मुक्त कराना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। संसदीय लोकतंत्र को सहभागी लोकतंत्र में बदलना ही होगा। लोक संसद के लिये आंदोलन इसका प्रारंभिक चरण है। लोक स्वराज्य मंच ने इसकी पहल की है। लोक स्वराज्य मंच से जुड़िये और अपने भगवान को जेलखाने से मुक्त कराने की पहल कीजिए।

– बजरंगलाल

पत्र व्यवहार का पता

पता – बजरंग लाल अग्रवाल पोस्ट बॉक्स 15, रायपुर (छ.ग.) 492001
Website : www.margdarshak.info

प्रकाशक, सम्पादक व स्वामी – बजरंगलाल

09617079344

Email : bajrang.muni@gmail.com
support@margdarshak.info
Facebook Id : बजरंग मुनि (User Name)

मुद्रक – माया प्रेस रामानुजगंज, सरगुजा (छ.ग.)